

## **Badal Sircar and Beyond: Third Theatre Network in West Bengal, 1971 – Present**

Submitted by: Sandip Debnath

Entry Number: 2016HUZ8178

### **Abstract<sup>1</sup>**

Over the last five decades Third Theatre has become a distinct and recognisable cultural force as a non-party Left “free” theatre movement, especially in Calcutta (Kolkātā since 2001) and across several districts of West Bengal, India. However, existing studies on Third Theatre have primarily focused on Badal Sircar and the group he had established – Satābdī. This work, in contrast, brings to the fore the collaboration among the Third Theatre groups at various levels – preparation, performance, and outreach. The study also takes into consideration the audience patrons, who stand in support of the “movement” and, thus, form a part of the network. As such, my study presents a critical enquiry of that which has hitherto remained outside the purview of literary and theatre studies concerning the Third Theatre, during the lifetime of Sircar and even afterwards.

This dissertation offers an insight into how this theatre network functions and the nature of collaboration. Drawing references from Third Theatre workshops, performances, archival records, interviews, discussions, and the like, I demonstrate that both intra and inter-group collaboration is essential to this theatre movement. The groups not only perform together, organise theatre festivals, and invite the allied groups to perform in the localities of each other, but they produce plays collaboratively, provide support as replacement casts, and also conduct workshops and study-circles together. The strength of Third Theatre, therefore, generates not from any particular individual or group but the organisation, the network. The intrinsic “familiality” renders its imprint on the Third Theatre productions and also transforms their cultural activism into a “movement.”

---

1 The Hindi version which follows is a translation of the English original. In cases of confusion, this will prevail.

Hence, I argue that the network sustains the Third Theatre Movement both organisationally and aesthetically. Moreover, it is through the network that the Third Theatre groups gain their “political” identity, an agency, as well as a legitimacy. This, in turn, enables Third Theatre to stand as a cultural force behind the people’s movements. Thus, while being embedded within a larger socio-political and cultural framework, I contend that Third Theatre does play an agentive role as a “weapon” of social transformation, however minimal that be in the grand schema of affairs.

## सार<sup>2</sup>

पिछले पांच दशकों में थर्ड थिएटर एक गैर-पार्टी वाम "मुक्त" थिएटर आंदोलन के रूप में एक विशिष्ट और पहचानने योग्य सांस्कृतिक शक्ति बन गया है, विशेष रूप से कलकत्ता (२००१ से कोलकाता) और पश्चिम बंगाल (भारत) के कई जिलों में। हालाँकि, थर्ड थिएटर पर मौजूदा अध्ययनों ने मुख्य रूप से बादल सरकार और उनके द्वारा स्थापित "शताब्दी" पर ध्यान केंद्रित किया है। इसके विपरीत, यह शोध प्रबंध थर्ड थिएटर समूहों के बीच विभिन्न स्तरों - तैयारी, प्रदर्शन, और पहुंच - पर सहयोग को सामने लाता है। यह अध्ययन दर्शक-संरक्षकों को भी ध्यान में रखता है, जो "आंदोलन" के समर्थन में खड़े होते हैं और इस प्रकार, नेटवर्क का एक हिस्सा बनते हैं। मेरा अध्ययन उस की एक आलोचनात्मक जांच प्रस्तुत करता है जो अब तक थर्ड थिएटर से संबंधित साहित्य और रंगमंच अध्ययन के दायरे से बाहर रहा है, बादल सरकार के जीवनकाल के दौरान और उसके बाद भी।

यह शोध प्रबंध थिएटर नेटवर्क कैसे कार्य करता है, और उस में सहयोग की प्रकृति कैसी होती है, उसका एक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। थर्ड थिएटर कार्यशालाओं, प्रदर्शनों, अभिलेखों, साक्षात्कारों, चर्चाओं और इसी तरह के अन्य संदर्भों से मैं प्रदर्शित करता हूँ कि इस रंगमंच आंदोलन के लिए समूहों के अंत तथा अंतर सहयोग दोनों आवश्यक हैं। थर्ड थिएटर समूह न केवल एक साथ नाट्य प्रदर्शन करते हैं, नाट्योत्सव आयोजित करते हैं, और संबद्ध समूहों को एक-दूसरे के इलाकों में प्रदर्शन करने के लिए आमंत्रित करते हैं, बल्कि वे सहयोगात्मक रूप से नाटकों का निर्माण करते हैं, प्रतिस्थापन कलाकारों के रूप में सहायता प्रदान करते हैं, और एक साथ कार्यशालाओं और अध्ययन-मंडलियों का संचालन भी करते हैं। इसलिए, थर्ड थिएटर की ताकत किसी व्यक्ति विशेष या समूह से नहीं बल्कि संगठन, यानी नेटवर्क से उत्पन्न होती है। यह आंतरिक "पारिवारिकता" थर्ड थिएटर प्रस्तुतियों पर अपनी छाप प्रदान करती है, और उनकी सांस्कृतिक सक्रियता को "आंदोलन" में बदल देती है।

---

2 यह हिंदी संस्करण पूर्ववर्ती अंग्रेजी मूल का अनुवाद है। दुविधा की स्थिति में, अंग्रेजी मूल को सही समझा जाना चाहिए।

इस हेतु, मेरा तर्क है कि नेटवर्क थर्ड थिएटर आंदोलन को संगठनात्मक और सौंदर्य दोनों रूप से सशक्त बनाता है। इसके अलावा, नेटवर्क के माध्यम से ही थर्ड थिएटर समूह अपनी "राजनीतिक" पहचान, एक एजेंसी, साथ ही एक वैधता प्राप्त करते हैं। यह, बदले में, थर्ड थिएटर को जन आंदोलनों के पीछे एक सांस्कृतिक शक्ति के रूप में खड़ा होने में सक्षम बनाता है। इस प्रकार, एक बड़े सामाजिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक ढांचे के भीतर अंतर्निहित होने के बावजूद, मेरा तर्क है कि थर्ड थिएटर, कितना भी न्यूनतम हो, सामाजिक परिवर्तन के "हथियार" के रूप में एक सक्रिय भूमिका निभाता है।